तन्त्रनाथ झा

जन्म : 22 अगस्त 1909 ई०

मृत्यु : 4 मई 1984 ई० वाराणसीमे

जन्म-स्थान : धर्मपुर - उजान, दरभंगा

कृति : **महाकाव्य**- 'कीचक वध', 'कृष्ण चरित'

मुक्तक काव्य : 'नमस्या', 'मंगल-पंचाशिका',

एकांकी संग्रह : एकांकी चयनिका

बालोपयोगी कथा : 'योगीक संगी' आदि।

पुरस्कार : 1979 ई० मे **'कृष्णचरित'** (महाकाव्य) पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।

तंत्रनाथ झा पेशासँ शिक्षक तथा कालान्तरमे चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयमे अर्थशास्त्रक प्राध्यापकक रूपमे अवकाश ग्रहण कयल आ पुन: मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिमे लागि गेलाह। सरस काव्य सृजन निबन्धकार, संस्कृतसँ मैथिली अनुवादकक रूपमे आ मैथिलीक आन्दोलन कयनिहारक रूपमे बेसी ख्याति भेटलनि। साहित्यक विभिन्न विधामे रचना करबामे समर्थ प्रो० झाक एक गोट ललित निबन्ध 'हमर ठेङा' तथा एकगोट कथा 'चोर'- सेहो प्रकाशित अछि।

काव्य-प्रसंग : कवि एहिठाम मुसरी झाक माध्यमे कहय चाहैत छथि जे एखनो हमरा बीच रूढ़िवादी परम्पराक निर्वाह कयनिहार धर्म भीरुक कमी नहि अछि। गामे गाम मुसरी झा सन लोक अछि जे एखनो गायक गोबर, गंगौट, गोमूत्र आ टीक कटा कऽ प्रायश्चित करैत छथि। अपन पापक निवारणार्थ गंगा स्नान करैत छथि। किएक तँ गंगा कें पापोद्धारिणी कहल गेल अछि। मुसरी झा सेहो कुकुरक देहक पानि पड़ला उत्तर गंगा स्नान हेतु विदा होइत छथि कि बाटमे बथान पर बिलाइक ऐंठ दूध पीबि घोर पापक भागी बनैत छथि आ गंगा स्नानसँ ओकरा निवारण करबाक हेतु विदा होइत छथि।

मुसरी झा

सुनिअ रसिकजन, हमर गीत ई
गाबि सुनाएब कथा पुरान,
नहि हो मनलग्गू यदि ई तँ
बैसू मूनि दुनू बरु कान ।

बहुतो दिन पहिने मिथिलामे
मुसरी नामक पण्डित एक,
रहथि दरिद्र, रहथि धएने ओ
तैओ सदाचार केरि टेक ।

सभ दिन अन्हरोखे उठिकेँ ओ
नित्य-कर्ममे लागथि जाए,
करइत पूजा-पाठ निरन्तर
दोपहरिआ जाइन्ह लगिचाए ।

माघ मास थर-थर तन कँपइत
जखन रहथि घसइत श्रीखण्ड,
गाँती बन्हने आएल दौड़ल
छँओड़ा एक परम उद्दण्ड ।

कुक्कुर एक निन्दसँ मातल
लगक घड़ारी लग घसमोड़ि,
छल सुखसँ सूतल छल देने
माटि समीपक नहसँ कोड़ि ।

हरल न फुरल ओहि छँओड़ाकेँ
चुप्पचाप पण्डित-लग आबि,
गओँ सँ ल' जलपात्र हुनक ओ
गेल सहटि पाएर निज दाबि ।

छँओड़ा रहए परम खुरलुच्ची
परम उकाठी हरहट ढेरि,
बाट-बटोही गौआँ-घरुआ
भए अकच्छ पिटलक कए बेरि ।

देखि कुकुरकेँ सुखसँ सूतल
ओकरा मनमे उपजल आनि,
जाए कुकुर-लग लोटासँ ओ
ढारल ओकरा ऊपर पानि ।

फुरफुराएकेँ उठल कुकुर झट
अकचकाए लागल केँकिआए,
लोटा ठामहि पटकि उचक्का
खेँखिआइत झट गेल पड़ाए ।

कुकुर बेचारा अति दुखित मन
साँसे देह लेलक उठि तानि,
रोइआँ ठाढ़, कान कर पट-पट
लागल झाड़ए देहक पानि ।

मुसरीझाक देह पर पड़लनि
ऊड़ि कुकुर केरि देहक पानि,
अकचकाए घुरि देखल जखनहि
नष्ट-नष्ट कहि उठला फानि

ठामहि झटकि जाए पण्डित जी
पोखरिमे देलनि कत डूब,
गाबिस माटि उखाड़ि अथाहक
गत्र-गत्र मललन्हि पुनि खूब ।

कतबो डूब देलन्हि तन मललन्हि
तैओ मन प्रसन्न नहि भेल,
तीतल वसन पानि कर टप-टप
मुसरी झा घुरि आङन गेल ।

ओतए ब्राह्मणीकेँ बजाएकेँ
निर्जनमे कहलन्हि सब हाल,
ठोकि कपाड़ बिलखि पुनि कहलनि
की विधि बुढ़बा लिखलक भाल ।

धर्मशास्त्रमे स्पष्ट लिखल अछि
एहन ब्राह्मण थिक चण्डाल,
कोन परि पुनि शरीर शुचि पाओत
पीअब गोँत गिड़ब बरु बालु ।

बहुविध बहुत विचार कएल पुनि
दुहु जन कएल घोँघाउजि खूब,
अन्तिम निश्चय ई पओलक जे
मुसरी देथि सिमरिआ डूब ।

गंगा थिकथि कलिक अघ-हारिणि
घोर पाप परसहिँ दुरि जाए,
पातक विषम नष्ट हो सत्वर
जहिना जल-बिच नोन बिलाए ।

लए कम्बल जलपात्र पराठी
दोहरि धोती झोड़ा एक,
कुकुर सरापि चलला मुसरी झा
राखए अपन धर्म केरि टेक ।

कोस दुइ तिन चलला पण्डित
दिनकर अस्त-शिखर पर गेल,
राति बिताएब कतए जाए हम
सोचइत पण्डित चिन्तित भेल ।

निर्जन बाट अन्हार राति छल
भूखेँ पेटहिँ कुदए बिलाड़ि,
पाँतर बीच पड़ल मुसरी झा
भए उदस्त चलला झख मारि ।

जाड़हिँ काँपए हाड़ खटाखट
छाती कर धड़ धड़ भय पाबि,
जानि अशुचि तन, विजन बाट बिच
प्रेत पटकि देअए ने दाबि ।

तावत बीच बाधमे भेटल
रहए बथनिआ देने बथान,
जेरक जेर माल छल पसरल
देखितहिँ हुनकर पलटल प्रान ।

पाकड़ि तर छल घूड़ पजारल
सभ छल बैसल सभा लगाए,
एक जन लोरिकक गीत गबै छल
रोपि ठेहुनिआँ भाव देखाए ।

पण्डित बढ़ि ओकरा लग गेला
दए परिचय कहलन्हि सब हाल,
सब गोआर भए अति हुलसित मन
करइत आदर भेल बेहाल ।

पण्डित कहल जखन जे होएतौ
जल्दी किछु खोआबह आनि,
भूखेँ पेट सटल पाँजरमे
बजितहुँ होइत अछि बड़ ग्लानि ।

झटपट एक जन खरड़ा लएकेँ
खरड़ि लगहिँ पुनि सीँचल पानि,
ओढ़ना केरि कम्बल चौपेतल
बीच ठाम राखल पुनि आनि ।

मुसरी झाकेँ ताहि बैसाओल
आगाँ धएल पुरैनिक पात,
आँजुर भरि-भरि चूरा परसल
बजला 'बस-बस' पुरितहिँ सात ।

अनलक दूध भरल छल लोहिआ
छाल्ही छल आँगुर-सन मोट,
एको बेरि ने दाँत बैसाओल
नहि पीउल जल एको घोँट !
खाए-पीबि ढेकरैत राउत लग
घूड़क लग सटि बैसला जाए,
गरुड़-झम्प पुनि देथि घूड़ पर
कहुना जल्दी जाड़ पड़ाए ।
पूछल राउत "कहू, पण्डितजी
केहन एखनुक भोजन भेल ?
भरल पेट की व्यर्थ राति-बिच
खुद्दी खाए भूख दुरि गेल ?"
भए गदगद मुसरी पुनि कहलन्हि,
"अरुदा तोहर होअओ अखण्ड,
एतबोसँ जे भुखले रहता
थिकथि दरिद्रा ओ परचण्ड ।
निश्चय खाए जनौक शपथ हम
कहइत राउत छिअहु ई बात,
एहन मधुर दूध जिनगीमे
पड़ल आइ धरि छल नहि पात ।
एहन मोट ओ एहन बिलच्छन
छाल्ही तँ सुनलो नहि थीक,
इन्द्रो यदि बैसाए खोअबितथि
नहि किछु दितथि एहि सँ नीक।"
सुनि-सुनि मुसरी झाक कथा ई
गौरवसँ राउत गेल फूलि,
राखि चिलम पलथा दए बैसल
बिहुँसि कहए लागल पुनि झूलि ।

"पण्डित, हमर बथानक दूधक
पाओल अहाँ न असली स्वाद,
छँओड़ा सभ अछि बड़ अपरोजक
बजितहुँ होइत अछि परमाद ।

पसरक बाद दूध जे दुहलक
सभटा चुल्हिअहिँ देलक चढ़ाए,
एखन धरि जँ छालही पड़ितए
तरहथिअहुसँ जाइत मोटाए ।

एखन अहाँ जे खाएल पण्डित
से तँ दोसर छाल्ही थीक,
तेहने दूध बिलच्छन होइछ
तेँ ई लागल एहन नीक ।

सभ छल बैसल एतए न तैओ
ककरहु पड़ल ओहि पर आँखि,
हमहीँ आबि देखल जे पिलिआ
सभटा छाल्ही लेलक चाखि ।

यावत डाङ सम्हारि चलाबी
ता दूधो लेलक किछु चाटि ।"
सुनितहिँ मुसरी झाक माथ पर
मानू पड़ल लाख मन माटि ।

निश्चल आँखि निड़ाड़ि बाबि मुँह
जोरहि 'अएँ' कहि उठला फानि,
सभ गोआर मुह तकितहिँ रहि गेल
की भेल केओ सकल नहि जानि ।

संच-मंच पुनि आबि घूड़-लग
माथ हाथ दए बैसला जाए,
जँ-जँ लोक पुछैन्हि भेल की
मुसरिक मुह बिधुआएल जाए ।

●

शब्दार्थ – अघ = पाप; खुरलुच्ची = सतत उपद्रव करयवला; परसहि = छूनहि; सत्वर = शीघ्र, तुरंत; अशुचि = अपवित्र; गाँती = जाड़सँ बचबाक लेल माथ सहित शरीरकेँ झाँपैक लेल गरदनिमे बान्हल वस्त्र; घाँघाउजि = एकहि बेर बहुत लोकक बिना निष्कर्षक विवाद करब।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. मुसरी झा के छलाह ?
2. मुसरी झा गरीब होइतहुँ कथीक टेक रखने छलाह ?
3. मुसरी झा सदाचारी छलाह की नहि ?
4. मुसरी झाक दिनचर्याक उल्लेख करू।
5. श्रीखण्ड की होइत अछि ?
6. उद्दण्ड छौंड़ा की बन्हने छल ? कुकुर संग ओ की शैतानी कयलक ?
7. मुसरी झाक पानिकेँ के ओंघरौलक ?
8. मुसरी झा सिमरिया किएक गेलाह ?
9. मुसरी झा बथनिआँक ओतय की सभ भोजन कयलनि ? की सुनि ओ रद्द करय लगलाह ?
10. राउत मुसरी झा सँ की पुछलनि ?
11. 'मुसरी झा' शीर्षक कथा-काव्यक कथानक संक्षेपमे लिखू।

गतिविधि :

1. छात्रकेँ अपन आचार-विचार केहन रखबाक चाही तकर ज्ञान शिक्षक कराबथि।
2. निम्नलिखित शब्दक अर्थ लिखू :

   खरड़ा, डाङ, अकच्छ, गत्र-गत्र, उदस्त, घूड़, सहटि, बथनिआँ।
3. निम्नलिखित लोकोक्तिक प्रयोग वाक्यमे करू :

   आगूनाथ ने पाछू पगहा, ऊँटक मुँहमे जीरक फोड़न, उखरिमे मुँह देब तँ मुसराक डर, काज ने धंधा तीन रोटी बन्धा, ओझा लेखेँ गाम बताह गामक लेखेँ ओझा बताह।

निर्देश :

(क) शिक्षक छात्रसँ ढोंगी स्वभावक की गति होइत छैक तकर ज्ञान उक्त कवितासँ कराबथि।

(ख) समाजमे व्याप्त पाखण्ड, अंधविश्वासक अन्य उदाहरण दऽ ओकर दुष्परिणामसँ छात्रकेँ अवगत करयबाक अपेक्षा शिक्षकसँ कयल जाइछ।

(ग) मिथिलाक लोक साहित्यक आलोकमे लोरिक-सलहेसक सन्दर्भसँ छात्रकेँ परिचित कराबथि।

(घ) सदाचारक किछु दृष्टान्त दऽ शिक्षार्थीकेँ तदनुरूप दिशामे प्रेरित करबाक प्रयास कयल जयबाक चाही।

□